9

निर्माण स्थलों पर घुमंतू पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र एक पहल

सुरभि चावला*

भारत सरकार द्वारा नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार अधिनियम लागू करने के बावजूद नगरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण निर्माण स्थलों पर कार्यरत मज़दूरों के बच्चे शिक्षा से कोसो दूर हैं। रोज़गार की तलाश में ये मज़दूर एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते रहते हैं जिस कारण वे अपने बच्चों को पर्याप्त शिक्षा दिला पाने में असमर्थ हैं। प्रस्तुत लेख में इन बच्चों के लिए शिक्षा के अवसरों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

नगरीकरण और औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया ने जिस महानगरीय संस्कृति को जन्म दिया है, उसकी कल्पना करते ही हमारे सम्मुख एक वैभवशाली सुख-सुविधाओं से संपन्न शहर का चित्र उभरता जहाँ गगनचुंबी चमकदार इमारतें चमचमाती सड़कें, हरे-भरे सुनियोजित पार्क, तरह-तरह से बने बाज़ार-हाट, विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों की सहज उपलब्धता आदि है। इन सबके साथ एक वीभत्स दृश्य भी साकार होता है महानगर संस्कृति का — वह है सुविधाओं से वंचित मलिन आवासीय बस्तियाँ और सतत रूप से होने वाला निर्माण कार्य। यद्यपि एक ओर सतत रूप से चलने वाला निर्माण कार्य आर्थिक विकास का संकेतक है, तो दूसरी ओर निर्माण स्थलों पर रह रहे लोगों के संदर्भ में सामाजिक विकास के संकेतक शून्य के स्तर पर हैं। सामाजिक विकास के मुख्य संकेतक हैं —

- शिक्षा (पूर्व प्राथमिक स्तर से लेकर आगे तक)
- स्वास्थ्य सुविधाएँ (स्वच्छ पेयजल, शौचालय आदि की उपलब्धता से लेकर प्राथमिक चिकित्सा सेवाओं एवं अन्य स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता तक)
- स्वस्थ मनोरंजन सुविधाओं की उपलब्धता एवं उनका उपयोग
- सुरक्षित आवासीय सुविधाओं की उपलब्धता

उपर्युक्त चारों मूल संकेतक किसी भी निर्माण स्थल के पास या निर्माण स्थल पर रह रहे लोगों के जीवन में किसी भी रूप में दिखाई नहीं देते हैं।

साधारणतया, छोटे से छोटे व बड़े से बड़े निर्माण स्थल पर कम से कम सात-आठ परिवारों का जमावड़ा

*शोधार्थी, अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

अस्थायी निवास बनाकर अपना जीवनयापन करते हुए दिख जाता है। प्रत्येक परिवार में दो से लेकर पाँच की संख्या में बच्चे मिल जाते हैं। बच्चों की आयु शून्य से लेकर 14–15 वर्ष होती है।

जिस समय माता-पिता आजीविका उपार्जन हेतु कार्य में संलग्न होते हैं, उस समय उनके बच्चे धूल मिट्टी आदि में खेलकर 'असुरक्षित एवं अतिशय रूप से अस्वच्छ' परिवेश में अपना पूरा दिन बिता देते हैं।

इन स्थलों पर क्रैश, पूर्व प्राथमिक अथवा प्राथमिक विद्यालय जैसी कोई सुविधा नहीं होती और आस-पास यदि ऐसी कोई सुविधा होती भी है तो यह मज़दूर वर्ग अपने काम की अनिश्चित अवधि के कारण अपने बच्चों को विद्यालय भेजता भी नहीं है। उनमें से यदि कोई मज़दूर परिवार औपचारिक विद्यालयी व्यवस्था का लाभ भी उठाना चाहे तो नहीं उठा सकता क्योंकि निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार अधिनियम के बावजूद भी विद्यालयों की प्रवेश प्रक्रिया बहुत जटिल है। घर का स्थायी पता न देने की स्थिति में इन्हें प्रवेश नहीं दिया जाता है। इस कारण निर्माण स्थलों पर रह रहे लोगों के बच्चे 'शिक्षा' एवं 'पोषण' जैसी सुविधा और सामाजिक विकास के मुख्य संकेतक से वंचित रह जाते हैं।

दिल्ली महानगर के जिला दक्षिण-पश्चिमी में द्वारका नामक उपनगरी है जहाँ हर आधे किलोमीटर से भी कम की दूरी पर निर्माण कार्य होता हुआ मिलेगा और परिणामस्वरूप हर निर्माण स्थल पर रहते हुए मज़दूर व उनके परिवार भी मिल जाते हैं। इस उपनगरी के सेक्टर तीन आज़ाद हिंद फौज मार्ग पर एक निर्माण स्थल के साये तले रह रहे मज़दूरों के बच्चों को अनौपचारिक रूप से पूर्व प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाने का छोटा-सा प्रयास किया गया जिसे इस लेख के माध्यम से साझा करना चाहती हूँ क्योंकि यह अन्य स्थलों के लिए भी एक अच्छा उदाहरण हो सकता है।

विचार उत्पत्ति

दिनाँक 6.1.2016 की सुबह सेक्टर 3/13 एम.आर. वी. बस स्टॉप, द्वारका, नयी दिल्ली पर अचानक दो-तीन वाहन भीषण आवाज़ के साथ एक दूसरे से टकराते हैं। टकराने का कारण एक तीन वर्षीय बच्चा जो समीपस्थ निर्माण स्थल से खेलता-खेलता सड़क पर आ गया है और उसे बचाने के लिए द्रुत गति से चली आ रही कार अचानक घर्षण के साथ रुकती है। स्वाभाविक है कि उस कार के पीछे चले आ रहे वाहन अचानक रुक न पाने के कारण टकराएँगे ही। संयोग एवं सौभाग्यवश इस दुघर्टना में जान की क्षति नहीं होती यद्यपि आर्थिक रूप से क्षति अवश्य हुई पर यह दुर्घटना एक रचनात्मक विचार को जन्म देती है। इस रचनात्मक विचार के परिणामस्वरूप उस निर्माण स्थल (सैक्टर-3/13 आवासीय परिसर) के मज़दूर परिवारों के 3 वर्ष की आयु से लेकर 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए सामुदायिक सहभागिता से एक अनौपचारिक पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र उसी निर्माण स्थल पर खोला जाता है और एक वर्ष, 8 माह 19 दिन तक अर्थात् 18.09.17 तक यानी कि मज़दूरों द्वारा निर्माण स्थल को छोड़ने तक अस्तित्व में रहता है और बच्चों की पूर्व प्राथमिक शिक्षा एवं पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

कैसे आरंभ हुआ?

सैक्टर-3/13 द्वारका, एमआरवी बस स्टॉप के पीछे निर्माण कार्य चल रहा है और यह वह स्थल है जहाँ से प्रतिदिन सुबह मैं अपने महाविद्यालय के लिए गुज़रती थी और सायं काल भी इसी स्थल को पार करती हुई अपने घर पहुँचती थी। आते-जाते मेरी नज़र यहाँ के बच्चों पर पड़ती थी। कोई धूल में लेटा हुआ होता, कोई पत्थर पर रोटी रखकर उसे चाव से खा रहा होता, कुछ बच्चे मिल जुल कर खेल रहे होते तो कुछ माँ-पिता से अभद्र शब्द सुनकर हाथ पैर पटकते हुए रो रहे होते। सुबह शाम लगभग यही दृश्य मेरी दृष्टि से गुज़रता। अनेक बार मेरे मानस में विचार कौंधता कि ये बच्चे कैसे जीवित हैं? चारों ओर रेत-सीमेंट की गर्द, औज़ारों एवं मशीनों की आवाज़ें, न कोई दीवार या ओट, न बिछौना न गोद, ये किस तरह से जीवन जी रहे हैं? यह भी विचार कौंधता कि आज जब निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की दुंदुभी चारों तरफ बज रही है तो ये बच्चे उसका लाभ क्यों नहीं उठा रहे? क्यों ये बच्चे पूरा दिन इसी प्रकार बिता देते हैं?

बस इसी तरह के विचार मन में आते और धुएँ के बादल की तरह उड़ भी जाते।

कभी भी ठहर कर यह चिंतन नहीं किया कि इन बच्चों के लिए मेरे जैसी युवा नागरिक की ओर से भी कोई सकारात्मक एवं रचनात्मक पहल की जा सकती है।

दिनाँक 6.1.2016 को भी मैं सामान्य दिनों की तरह उस स्थान से गुज़र रही थी और मेरे सामने ही दिल दहला देने वाली घटना होते-होते टल गई। कार चालक यदि अकस्मात् अपना वाहन नहीं रोक पाता तो खेलते-खेलते सड़क तक आ पहुँचे बच्चे की अकाल मृत्यु निश्चित थी। इस भयावह दृश्य की कल्पना करके मैं सिहर उठी और महाविद्यालय पहुँचने तक अनेक प्रकार के विचार मेरे मन-मानस में कुलबुलाते रहे। चूँकि मैं 'पूर्व बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा' जैसे विषय में परास्नातक का दो वर्षीय पाठ्यक्रम कर रही हूँ तो मुझे लगा कि इस विषय में पाठ्यक्रम करने की सार्थकता तभी है जब मैं उक्त निर्माण स्थल के मज़दूरों के बच्चों हेतु अपने ही स्तर पर एक पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र का आयोजन कर सकूँ।

विचार से व्यवहार तक

किसी भी विचार या कल्पना या सपने का साकार होना क्या बहुत आसान है? भारत जैसे देश में जहाँ समाज के समूचे ताने-बाने में संशय, लाभ-हानि, जाति-पाति, धर्म, वर्ग आदि की जटिलता नज़र आती है और जहाँ प्रशासनिक विसंगतियाँ भी मज़बूती के साथ खड़ी हो वहाँ क्या कोई युवा लड़की अपरिचित परिवेश में 'सामुदायिक संगठन' की पहल से जुड़ा कार्य कर सकती है? निश्चित रूप से एक असंभव-सा कार्य था कि मैं मात्र एक विचार के साथ इस निर्माण स्थल पर कोई पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र शुरू कर सकूँ। मेरे सामने कई प्रश्न थे, जैसे —

- मज़दूर परिवारों के साथ किस समय बात की जाए?
- वे मेरी बात क्यों सुनेंगे?
- वे कैसे विश्वास करेंगे कि मैं निस्वार्थ भाव से उनके बच्चों के हित के लिए कार्य करना चाहती हूँ?
- यदि उन्हें अब तक अपने बच्चों की शिक्षा, देखरेख, पोषण आदि की ज़रूरत महसूस नहीं हुई

तो क्या अचानक मेरे कह देने से वे इस ज़रूरत को समझ पाएँगे?

- यदि उनकी सहमति बन भी जाती है तो केंद्र का स्थान क्या होगा?
- बैठने के लिए दरी, पेय जल, खिलौने, पुस्तकें आदि का प्रबंध कैसे व कहाँ से किया जाएगा?

बहुत से सवाल उठे जिन्हें सिलसिलेवार मैंने अपनी डायरी में लिखा। युवा मन यह कहता था कि मैं अकेले ही इनका समाधान ढूँढ लूँगी और अब केंद्र आरंभ होगा तो सभी को चौंका दूँगी। पर अपने युवा मन की कुलाँचों को थोड़ा बाँधना पड़ा क्योंकि कल्पना को साकार करना इतना सरल कार्य नहीं था। अत: अपने परिवार जन के समक्ष मैंने अपना विचार प्रस्तुत किया। चूँकि विचार बहुत नेक था, अत: सराहना एवं प्रशंसा के भावों सहित, मेरे इस विचार का स्वागत किया गया। साथ ही तरह-तरह के संसाधन जैसे दरी, खिलौने पठन-लेखन सामग्री, बिस्कुट इत्यादि उपलब्ध करवाने का पूरा एवं पक्का आश्वासन भी दिया गया। परिवारजन के अनुसार मज़दूरों से मुझे स्वयं बात करनी थी या ऐसे कहिए कि वास्तविक धरातल मुझे स्वत: ही तैयार करना था। यद्यपि मुझे सामुदायिक संगठन और सामुदायिक विकास की प्रक्रिया के बहुत अनुभव नहीं थे फिर भी अपने ही विचारों का मंथन करती हुई अवकाश के दिन सायंकाल उस निर्माण स्थल पर पहुँची। दृश्य कुछ इस प्रकार का था.... ईंटों के चूल्हों से धुआँ उठ रहा था, कुछ महिलाएँ उन पर रोटी आदि बनाने में व्यस्त थीं, दो-तीन महिलाएँ इधर-उधर सिकुड़ी-सी बैठी थीं। पुरुष वर्ग में कुछ लेटे तो कुछ टहलते से नज़र आए। बच्चे हमेशा की भाँति इधर-उधर लुढ़कते डोलते-लड़ते पीटते खेलते नज़र आए।

मेरा परिधान, मेरा रंग-रूप मुझे उनसे अलग कर रहा था जो उन सभी को एक स्थान पर लाने में सहायक सिद्ध हुआ। बिना किसी प्रयास के इधर-उधर डोलते पुरुष महिलाएँ, बच्चे और यहाँ तक कि रोटी पकाती महिलाएँ भी मेरे पास आ गईं, जो नहीं आई वे भी मेरी ओर अपना ध्यान केंद्रित करने की मुद्रा में थी। औपचारिक नमस्ते आदि के बाद मैंने उनका ध्यान 6.1.17 वाली घटना की ओर दिलाया। उनसे यह भी पूछा कि विद्यालय जाने वाली उम्र के बच्चे हैं आपके, क्यों नहीं भेजते आप इन्हें विद्यालय?

एक नौजवान से मज़दूर ने लगभग कुछ घूरते हुए पूछा — "कौन 'जैन जी ओ' वाली तो नहीं हो?" मुझे यह स्पष्ट नहीं हो पाया। दो तीन बार पुन: यही सवाल उन्होंने किया तो मैंने 'जैन जी ओ' से उनका तात्पर्य पूछा। उस नौजवान मज़दूर ने 'जैन जी ओ' का जो लंबा-सा स्पष्टीकरण दिया उससे स्पष्ट हुआ कि वह मुझसे पूछ रहा है कि 'क्या मैं किसी एन.जी.ओ. से संबंधित हूँ।'

मैंने बहुत ही संयत भाव से पुन: एक-एक शब्द चबाते हुए अपना उद्देश्य स्पष्ट किया —

- आप सभी वयस्क मज़दूरी जैसे घोर परिश्रम के काम में व्यस्त रहते हैं,
- जिस समय आप अपने-अपने काम में व्यस्त हैं, उस समय आपके बच्चे अनावश्यक तरीके से अस्वस्थकर हालातों में खेल-कूद रहे होते हैं...

मेरी बात को काटकर एक स्त्री बोली — "जद अपने संग लेले कर तो डोल नहीं सकती है, एक बेरी

लटलन को बुखार ठाणि रहा तो संग लिवा कर गारा बनावन लागी, तेही मेटवा आकर ऐसिन डॉट लगायी कि आगे हिम्मत ही न परि।"

इस प्रकार और स्त्रियों ने भी अपने बच्चों को लेकर अपनी व्यथा सुनाई।

सबका मंतव्य यह था कि वे अपने बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा एवं स्वास्थ्य तीनों को लेकर बहुत चिंतित हैं पर सबसे पहले आजीविका का भीमकाय प्रश्न है। उन्होंने यह भी प्रश्न किया कि सरकार को जब पता है कि हम जैसे हज़ारों मज़दूर तीन-चार महीने से अधिक किसी *कंस्ट्रक्शन साइट* पर टिक नहीं सकते और निर्माण कार्य पूरा होते ही हमें वहाँ से दूसरे ठिकाने जाना ही पड़ता है तो सरकार हमारे लिए 'घुमंतू पाठशाला' क्यों नहीं खोल देती। एक महिला ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'ये ही अगर अमीरों के बच्चे होते तो सरकार थोड़ी-थोड़ी दूर पर छुट्टन-मुट्टन पाठशाला ज़रूर खुलवा देती।'

उपर्युक्त वार्तालाप से आप समझ ही गए होंगे कि निर्माण स्थल पर मज़दूरों के बच्चों के लिए पूर्व प्राथमिक पाठशाला खोलने का प्रस्ताव बहुत आसानी से मज़दूर परिवारों द्वारा पारित कर दिया गया।

- सनद रहे कि यह समग्र वार्तालाप एवं संवाद मात्र एक दिन का नहीं है। उनका विश्वास जीतने, अपनी बात उन तक रख पाने, उनकी ज़रूरतों को समझने इस समूची प्रक्रिया में पूरे आठ दिन लगे।
- सनद यह भी रहे कि पहले दिन से लेकर लगभग आखिर तक कुछेक लोग यह प्रश्न पूछना नहीं भूले कि इस सबसे मुझे क्या लाभ होने वाला है।

उस स्थान विशेष में बच्चों को रचनात्मक रूप से संलग्न करने की आवश्यकता स्थापित होने के बाद आगे का कार्य बहुत ही आसान था।

निर्माण स्थल पर कुछ कक्ष ऐसे तैयार हो चुके थे जो पूरी तरह से तो तैयार नहीं थे पर 'सुरक्षा' की दृष्टि से, धूप-वर्षा, सर्दी के बचाव की दृष्टि से बच्चों को एक साथ बैठाकर कक्षा संचालन की दृष्टि से उपयुक्त थे। उस निर्माण स्थल के ठेकेदार से मज़दूर परिवारों ने बात करके एक कमरे में जो कि हालनुमा था, शिक्षा केंद्र खोलने की अनुमति ले ली।

मुझे लेश मात्र भी आभास नहीं था कि यह कार्य इतनी आसानी से होने वाला है। क्योंकि मैंने तो यही सुना था कि समुदाय में विकास और विशेषकर शिक्षा की बात करना सबसे कठिन चुनौती भरा काम है।

जैसा कि मैं पहले ही संकेत कर चुकी हूँ कि दरी, चल श्यामपट्ट, खिलौने, बाल साहित्य से जुड़ी रंगीन चित्रात्मक पुस्तकें, रंग, कलम इत्यादि मिलने का आश्वासन मिल चुका था, सो, कक्ष की सुविधा और केंद्र खोलने की सहमति के साथ ही यह सभी सामान प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करवा दिया गया। इसके लिए मैं अपने परिवार जन और उनके मित्रों के प्रति सदैव आभारी हूँ कि सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में उन्होंने मेरी न केवल सहायता ही की वरन् समय-समय मार्गदर्शन कर मनोबल भी बढ़ाते रहे।

केंद्र का शुरुआती सप्ताह

जैसा कि मैंने अपने पाठ्यक्रम के दौरान सीखा-समझा था, बच्चों को खेल गीतों से जोड़ा गया, जैसे —

राजा राजा, हाँ मेरी बाजा
तेरी नगरी में बंपु आया

बच्चे हमारे पास आने को लालायित रहे इसके लिए मैंने लोक कहानियों का सहारा लिया।

मैंने देखा कि प्रतिदिन एक न एक मज़दूर झाँक कर ज़रूर जाता कि मैं करवा क्या रही हूँ। पहला सप्ताह बीतते न बीतते मुझे कहा गया कि 'ये खेल किस्से कहानियाँ ही करवानी हैं तो बच्चे यूँ ही भले थे। भला ये भी कोई पढ़ाई हुई? आपने तो पढ़ाने-लिखाने की बात कही थी। आप तो सिर्फ़ गाना गवाती हो, खेल खिलाती हो, तो भी हम अनपढ़ों वाला। कुछ अंगरेजी हो और साथ-साथ पढ़ाई-लिखाई हो कॉपी-किताबों में।'

मैं समझ रही थी कि हमारे देश में पढ़ाई-लिखाई का मतलब 'अ-अनार, क-कबूतर' बोलने लिखने तक ही सीमित है। खेल-कूद, कहानी-किस्से, सर्किल टाइम यह सब 'पढ़ाई' में नहीं आता। मैंने निर्णय लिया कि अगर मुझे यहाँ टिकना है तो अपनी समझ की शिक्षणशास्त्रीय अवधारणाओं को थोड़ा पीछे रखना होगा और माता-पिता की समझ के अनुसार भी चलना होगा। इसलिए एक घंटा क-कबूतर की शैली में वर्णमाला लिखवाई जातीं, आधा घंटा 1, 2, 3, 4 गिनती बुलवाई जातीं और अभिभावकों को अहसास करवाने के बाद कि बच्चे पढ़ रहे हैं, मैं अपनी युक्तियाँ शुरू कर देती। कहना न होगा कि मेरी खेल संबंधी युक्तियों से बच्चे बहुत खुश रहते और चीख-चीखकर गिनती व वर्णमाला बोलने से अभिभावक बहुत खुश रहते।

इसका कारण यह था कि मज़दूर वर्ग अभिभावकों को इस बात का इल्म नहीं था कि दरअसल 'पढ़ाई-लिखाई' असल मायने में होती क्या है? उनकी समझ यही कहती है कि —

- जब तक क्रम से वर्णमाला नहीं होती तो पढ़ाई नहीं हुई।
- जब तक ज़ोर-ज़ोर से बोलकर गिनती नहीं बोली गई, तब तक गणित की पढ़ाई नहीं हुई एवं
- जब तक कॉपी में वर्णमाला, गिनती आदि बार-बार नहीं लिखवाई गईं, तब तक 'लिखाई' नहीं हुई।

पहले मेरा मन यह हुआ कि मैं इन सभी माता-पिता को, विशेषकर माताओं को एक साथ बैठाकर संबोधित करूँ और उन्हें शिक्षा यानी पढ़ाई-लिखाई के असली मायने बताऊँ और उनसे अनुरोध करूँ कि मैं बच्चों के साथ जैसा करना चाहती हूँ, वैसा मुझे करने दें क्योंकि पूर्व प्राथमिक स्तर के लिए वही होना चाहिए। पर मैंने अपने इस विचार को क्रियान्वित नहीं किया क्योंकि यह काम इतना आसान और जल्दी से होने वाला नहीं था। मैंने विचार किया कि मुझे अपनी ऊर्जा एवं समय बच्चों को रचनात्मक रूप से संलग्न करने में लगानी चाहिए। जैसे-जैसे बच्चों का विश्वास मेरे प्रति पनपने लगेगा और अभिभावकों को भी मेरी सेवाओं का परिणाम नज़र आने लगेगा तभी उन्हें नीतिगत सैद्धांतिक तथ्यों से अवगत करवाऊँगी। अभी ऐसा करने से डर था कि कहीं अभिभावक ये न कह दें कि अगर हमारी तरह से नहीं करना तो यहाँ आने की कोई आवश्यकता नहीं। बस यही कारण था कि मैं लगभग एक घंटे गिनती एवं वर्णमाला बुलवाने का काम करती जिससे अभिभावक खुश हो जाएँ और फिर वही क्रियाएँ करवाती जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र पर होना चाहिए।

मेरे द्वारा शुरू किए गए घुमंतू पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र की छोटी-सी झलक —

- स्थल — सैक्टर – 3/13 द्वारका, एमआरवी बस स्टाप के पीछे निर्माणाधीन इमारत
- समय — पहली पाली 9.30 से 12.30 एवं दूसरी पाली 5.30 से 6.30 सायंकाल
- बच्चों की कुल संख्या — 42
- बच्चों का आयु वर्ग — 3 वर्ष से लेकर 6 वर्ष तक के बच्चे
- उपलब्ध संसाधन — दरी, पुराने कैलेण्डर, तरह-तरह के खिलौने (जैसे — बस, इंजन, फल, लकड़ी के बर्तन, गुड्डा-गुड़िया, साँप-सीढ़ी, लूडो, कूदने वाली रस्सी, ढोलक, लकड़ी के ब्लॉक, वाटर कलर एवं 5-6 ब्रुश, रंग-बिरंगी पुरानी चुन्नियाँ, कपड़ों की कतरने, पुराने अखबार, मुलतानी मिट्टी, सूखे रंग, छोटी-बड़ी कूचियाँ, औपचारिक विद्यालय जा रहे बच्चों की पुरानी कापियाँ।
  (नोट — उपर्युक्त संसाधन मित्रों, संबंधियों आदि से प्राप्त किए गए।)
- संसाधन व्यक्ति — स्वयं। उसके पश्चात् मेरे कक्षा मित्र सलोनी और श्रेयस जो अंबेडकर विश्वविद्यालय से प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं देखभाल, कार्यक्रम के विद्यार्थी हैं।
- पाठ्यचर्यक बिंदु —
  - खेल गीत गायन
  - बाल कविताएँ
  - ध्वन्यात्मक कविता खेल
  - रंगों के नाम और पहचान
  - रंग भरना
  - ऑरिगेमी (नाव, घर, तारे, कमीज, चूहा, फूल)
  - ठप्पे — अंगूठे, अंगुली, कील का मुंहसिरा, पत्तियां, रोएंदार कपड़ा
  - एक्शन शब्द — ताली बजाना
    (अभिनय के साथ शब्द बोलना)
    कूदना
    फुदकना
    दौड़ना
    हँसना
    खाना खाना
    बैठना
    नहाना
- कहानी सुनाना और कहना
- भिन्न-भिन्न परिचित स्थितियों पर संवाद बुलवाना
- घेरा समय (Circle time) — अभिनय के साथ कविताएँ गाना जैसे —
  हम बाज़ार जाएँगे,
  हम जलेबी लाएँगे
  कितनी जलेबी लाएँगे
  हम... जलेबी लाएँगे।
- मिट्टी का कार्य — मिट्टी से तरह-तरह के खिलौने, बर्तन, वस्तुएँ आदि बनाना
- स्वतंत्र अभिव्यक्ति — आस-पास की बेकार पड़ी वस्तुओं का संग्रह कर उनको चिपका मनपसंद आकृतियाँ बनाना।
- रंगों, चॉक आदि से चित्रकारी करना
- छोटा-बड़ा
- दूर-पास की अवधारणा

- अंदर-बाहर
- कॉपी में गिनती 1 से 25 एवं वर्णमात्रा श्यामपट्ट से उतरवाना (अभिभावकों की संतुष्टि के लिए)

इस घुमंतू पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र में उपर्युक्त सभी गतिविधियाँ करवाई गईं।

इस निर्माण स्थल पर निर्माण कार्य पूरा होने के साथ-साथ सभी मज़दूर किसी दूसरी जगह चले गए हैं। उन्होंने जाते-जाते यही इच्छा प्रकट की कि आजीविका की मजबूरी के रहते उन्हें जाना पड़ रहा है अन्यथा वे बिल्कुल भी नहीं जाना चाहते, क्योंकि यहाँ उनके बच्चों की बहुत पढ़ाई-लिखाई हो रही है। इस सफल कथानक के लिखने तक इस मज़दूर वर्ग में से 8 परिवार अपने दूर के कार्यस्थल से लौटकर आए हैं और अपने दूसरे कार्यस्थल पर भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्र को जारी रखने की माँग उठाई है।

अपनी उम्र के सभी साथियों और नीति-निर्धारकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि मेरे द्वारा शुरू की गई पहल के लाभ और पूर्व विद्यालयी शिक्षा का महत्त्व देखते हुए प्रत्येक निर्माण स्थल पर श्रमिकों के बच्चों के लिए पूर्व विद्यालयी शिक्षा केंद्र खोलने का अत्यावश्यक कदम उठाएँ।